क्या जीन्स का पेटेंट सही है?

अमेरिका में पेटेंट को लेकर कानूनी विवाद हाल में काफी सुर्खियों में है। सवाल यह है कि जीन्स को पेटेंट किया जा सकता है या नहीं। यह विवाद एक बार फिर उन दो जीन्स को लेकर उठा है जो स्तन और अण्डाशय कैंसर से सम्बंधित हैं। मामला अब अमेरिकी संघीय अदालत में है।

अमेरिकन सिविल लिबर्टीज़ यूनियन (ACLU) ने मई 2009 में दोनों पेटेंट को असंवैधानिक बताते हुए इनके विरोध में याचिका दायर की है। यूनियन का कहना है कि पेटेंट के नाम पर चिकित्सा जांच और अनुसंधान कार्य में रुकावट पैदा होती है जबकि ऐसे अनुसंधान से उपचार में सहयोग मिल सकता है। इस मामले के केन्द्र में है कंपनी मिरिएड जेनेटिक्स जिसने स्तन और गर्भाशय कैंसर से जुड़े 2 जीन्स के स्वामित्व का दावा किया है। कंपनी का तर्क है कि पेटेंट उसके उन लाभों की रक्षा करता है जो चिकित्सा जांच और अन्य तरीकों से उसे मिलते हैं। इस पेटेंट को खारिज करना व्यावसायिक बायोटेक्नॉलॉजी को खत्म करने जैसा होगा।

सवाल यह है कि क्या ACLU का मुकदमा सही है? क्या कैंसर जीन्स को पेटेंट के दायरे से बाहर कर देना चाहिए?

कुछ जानकारों का मत है कि बायो-टेक के क्षेत्र में अधिकतर पेटेंट आविष्कारों के लिए नहीं, खोजों के लिए दिए गए हैं। जीन्स के संदर्भ में यह सवाल महत्त्वपूर्ण है।

सामान्य-सा सवाल है कि "कौन सी चीज़ें पेटेंट की जा सकती है" या "किसे पेटेंट योग्य माना जाए?" क्या हम उस जीन को पेटेंट कर सकते हैं जिसे हमने खोजा है? पेटेंट वास्तव में उन बौद्धिक सम्पत्तियों का संरक्षण है जिनका व्यावसायीकरण हो सकता है। कुछ वर्षों पहले ब्लैकबेरी मामले में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का फैसला था कि बौद्धिक सम्पत्ति कानून तभी लागू होगा जब आप इससे कोई उत्पाद बना रहे हों। इससे दो सवाल बनते हैं - पहला, क्या किसी खोज का पेटेंट देना वाजिब है? और दूसरा क्या जीन्स का व्यावसायीकरण होने जा रहा है?

मसलन, जीन्स में पालीमॉर्फिज़्म का पता लगाने की तकनीक का तो व्यावसायीकरण हो सकता है। तो फिर तकनीक का पेटेंट किया जाना चाहिए न कि जीन्स का। मसलन, हम आम उपयोग की किसी दवा की बात करते हैं। यह दवा शरीर के किसी अंग या किसी प्रक्रिया या जीन/जीन-उत्पाद को निशाना बनाती है। मगर दवा के लक्ष्य को पेटेंट नहीं किया जाता है। बल्कि दवा और उसको बनाने की रासायनिक प्रक्रिया को पेटेंट के दायरे में रखा गया है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि कुछ और भी दवाएं हो सकती हैं जो इसी प्रक्रिया या जीन पर काम करती हों। सभी को पेटेंट किया जा सकता है। ऐसे में कोई भी तार्किक, वैध या मान्य कारण नहीं दिखता कि जीन्स को पेटेंट दिया जाए।

यदि जीन्स के पेटेंट की अनुमति मिल भी जाती है तो कैंसर जीन के मामले में और भी कई पेंच हैं। लोगों का मानना है कि पेटेंट आविष्कार के लिए मिलना चाहिए, खोज के लिए नहीं। फेडरल सर्किट कोर्ट का भी मानना है कि ऐसी कोई भी चीज़ पेटेंट की जा सकती है जिसे इंसान ने खुद बनाया हो। ***(स्रोत फीचर्स)***